विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत
वर्ग सप्तम

दिनांक 23 मई 2020
राजेश कुमार पाण्डेय

आचार्यः द्रोणाचार्यः कौरवाणां पाण्डवानां च गुरूः आसीत् सः आश्रमे वसतः तान् सर्वान्
प्रथमे दिने अपाठयत्– "सत्यं वद्। धर्मं चर। क्रोधं मा कुरु।"
आचार्य द्रोणाचार्य कौरव और पांडवों के गुरु थे एक बार वह आश्रम में रह रहे सभी को प्रथम दिन पढ़ाया
"सत्य बोलो, धर्म पर चलो' क्रोध नहीं करो।"

युधिष्ठिरं विना अन्यैः सर्वैः पाठः शीघ्र कण्ठीकृतः।
युधिष्ठिर के अलावे अन्य सभी ने पाठ याद कर लिया।

द्वितीये दिने श्रवण समये दुर्योधन भीम आदयः सर्वे स्व–स्वा पाठं श्रावयामासः।
दूसरे दिन सुनाने के समय में दुर्योधन भीम आदि सभी अपना -अपना पाठ सुना दिया।

केवलं युधिष्ठिरं भूमौ दन्तदृष्टि अतिष्ठत्।
केवल युधिष्ठिर मुंह को झुका कर भूमि पर बैठा रहा।

एतत् अवलोक्य गुरुः अकथयत् युष्माभिः प्रतिदिनं पाठं स्मणीयः नोचेत् दण्डनीयाः भविस्यय।
यह देख कर गुरु बोले तुम लोग प्रतिदिन पाठ याद नहीं करते हो यह उचित नहीं है दंड होगा।

एवं सप्तदिनानि व्यतीतानि, परं युधिष्ठिरेण पाठः न स्मृतः।
और 7 दिन बीत गए पर युधिष्ठिर पाठ याद नहीं किया।

श्रवण वेलायां सः भूमौ दत्तदृष्टिः तत्रैव अतिष्ठत्।
सुनाने के समय में वह भूमि पर सिर को झुका कर बैठा रहा।

क्रुद्धेन गुरूणा सः भृशं ताडितः।
क्रोध में गुरु जी ने उनको बहुत अधिक दंडित किया।

तथापि सः किञ्चिदपि नावदत्।
फिर भी वह कुछ नहीं बोले।